17 नवम्बर 2021, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2021-23

जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचन
अरिहन्त चैनल पर
प्रात: 6:08 से 6:38 तक
Ptst Youtube पर
पुन: प्रसारण 2.30 से 3.00 तक
प्रात: 9 से 10 तक समयसार पर

वर्ष : 44, अंक : 13
नवम्बर(द्वितीय), 2021 (वीर नि.संवत्-2547)
संस्थापक सम्पादक : **अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल**
सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

गुरुदेवश्री के नाम पर खुला देश का पहला महाविद्यालय...

श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन महाविद्यालय का उद्घाटन श्री शांतिकुमारजी धारीवाल द्वारा

कोटा (राज) : यहाँ दिनांक 07 नबम्वर 2021 को रानपुर स्थित श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन महाविद्यालय का पूरे विधिवत् उद्घाटन स्वायत्त शासन नगरीय विकास एवं आवासन तथा संसदीय कार्य मंत्री राजस्थान सरकार माननीय श्री शांतिकुमारजी धारीवाल के कर कमलों से द्वारा हुआ।

इस अवसर पर मंगल कलश श्रीमती सुनीता जैन तथा श्रीमती चंद्रा जैन बजाज ने मंत्रीजी के कर कमलों में भेट किया, जिसको मंत्रीजी ने कॉलेज के प्राचार्य के कमरे में स्थापित किया। मंच पर विशिष्ट अतिथि कोटा विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार डॉ. रामकुमारजी उपाध्याय, नगर विकास कोटा के पूर्व अध्यक्ष श्री रविन्द्रजी त्यागी, ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री प्रेमचंदजी बजाज, ट्रस्ट के महामंत्री श्री ध्याताजी बजाज, संस्था के सचिव श्री अविनाशजी जैन, कोषाध्यक्ष श्री धर्मेन्द्रजी शास्त्री एवं एस.एस.आई के संस्थापक अध्यक्ष श्री गोविन्दरामजी मित्तल उपस्थित रहे। अन्य विशिष्ट अतिथियों के रूप में श्रीमान परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर, पूर्व महापौर डॉ. रत्नाजी जैन, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री भगवतसिंहजी हिंगड़ तथा श्री प्रवीणजी जैन की गरिमामय उपस्थिति रही।

स्वागत भाषण में श्री प्रेमचन्दजी बजाज ने कहा कि श्री शांतिकुमारजी धारीवाल की इस कार्य में बहुत अनुमोदना रही। कॉलेज की जगह को अवैध कब्जे से दूर कराने में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री पवनजी जैन का अभूतपूर्व सहयोग रहा। कॉलेज के निर्माण में सर्वाधिक योगदान संस्था के सचिव श्री अविनाशजी का रहा है।

श्री अविनाशजी ने संस्था का परिचय देते हुये कहा कि इस कॉलेज में अभी बी. ए. आर्ट्स और बी. एस. सी. के 70-70 छात्रों को प्रथम वर्ष में प्रवेश दिया जाएगा। यहाँ 112 कमरों का हॉस्टल भी तैयार हुआ है। कॉलेज एवं हॉस्टल की आय से मुमुक्षु आश्रम द्वारा संचालित धरसेन महाविद्यालय और समन्तभद्र विद्यानिकेतन का संचालन किया जाएगा।

इस अवसर पर उद्घाटन सभा में बोलते हुये मंत्रीश्री शांतिकुमारजी धारीवालजी ने उक्त हृदयोगार व्यक्त करते हुए कहा कि शिक्षा नगरी कोटा में यह महाविद्यालय निश्चित रूप से अपना एक विशिष्ट स्थान स्थापित करेगा और भविष्य में यूनिवर्सिटी का रूप धारण करेगा, यही मेरी मंगल भावना है। इस प्रसंग पर काव्यांजलि एवं मंजूषा वाचन श्री संजयजी शास्त्री ने किया और संस्था के पदाधिकारियों ने श्री धारीवालजी को तिलक लगाकर, साफा पहनाकर स्मृति चिन्ह भेंट किया। मंगलाचरण श्रीमती चंद्राजी बजाज ने किया। मंगलनृत्य कुमारी आज्ञा जैन तथा आरोही जैन ने किया। समारोह का सफल संचालन श्री संजयजी शास्त्री ने किया। आभार कोषाध्यक्ष श्री धर्मेंद्रजी शास्त्री ने व्यक्त किया।

(26) सम्पादकीय -

पण्डितप्रवर टोडरमलजी

– डॉ. संजीवकुमार गोधा

छठे अध्याय का सार (कुदेव, कुगुरु और कुधर्म का प्रतिषेध)

चतुर्थ अध्याय में अनादि कालीन अगृहीत मिथ्यात्व की चर्चा करने के उपरान्त अब यहाँ छठे और सातवें अध्याय में गृहीत मिथ्यात्व की चर्चा करते हैं।

इस अध्याय में पण्डितजी कुदेव, कुगुरु और कुधर्म के श्रद्धान एवं पूजने आदि का निषेध करते हैं। उनको पूजना किसी भी प्रकार से कार्यकारी अथवा प्रयोजन की सिद्धि करने वाला नहीं है। वे इस बात को अनेक तर्क और युक्तियों द्वारा सिद्ध करते हैं।

कुदेव का निरूपण और उनके श्रद्धान आदिक का निषेध...

अनादि से जीवों के मिथ्यादर्शन आदिक भाव पाए जाते हैं, उनकी पुष्टता का कारण कुदेव, कुगुरु, कुधर्म का सेवन है; उनका त्याग होने पर मोक्षमार्ग में प्रवृत्ति होती है; इसलिए पूजता है।

१) मोक्ष के प्रयोजन से

२) परलोक के प्रयोजन से

३) इस लोक के प्रयोजन से

१) कुछ लोग मोक्ष की प्राप्ति के लिए अथवा सुखी होने के लिए कुदेवों को पूजते हैं कि ये मुझे मोक्ष तक ले जायेंगे; परन्तु यह विचार नहीं करते कि जिनके मत में मोक्ष का ही ठिकाना ही ना हो, उनका अनुसरण या आचरण करने से मोक्ष कैसे मिलेगा? जिनके पास स्वयं मोक्ष नहीं है, उनको पूजने से किसी दूसरे को मोक्ष कैसे मिल सकता है? जो स्वयं संसारी हो वे दूसरे को मोक्ष कैसे दिला सकते हैं? अत: मोक्ष के प्रयोजन से कुदेवों को पूजना अनुचित है।

२) दुनिया में कुछ लोग ऐसा कहते देखे जाते हैं कि कुदेवों को पूजने से भले ही मोक्ष ना मिले; लेकिन अगला भव तो सुधर ही जाएगा, देव आदि उत्तम गति तो मिल ही जाएगी, अच्छी सुख-सुविधा तो मिल ही जाएगी। पण्डितजी उनसे कहते हैं कि सुख-सुविधा तो पुण्य उपजने और पाप ना उपजने से मिलती है। जैसे परिणाम करेगा, वैसा फल मिलेगा; क्योंकि फल तो परिणामों का ही लगता है। परिणाम तो खोटे करता है और इन खोटे परिणामों के फल में चाहता है कि भव सुधर जाए, सो यह तो बहुत बड़ी भूल है, इससे पर लोक सुधरने वाला नहीं है।

दूसरी बात यह है कि जिनके आधार से अपना परलोक सुधारना चाहते हैं, उनके खुद के परलोक का कोई ठिकाना नहीं है, उनके आधार से औरों का पर लोक कैसे सुधरेगा? अतः परलोक के प्रयोजन से कुदेवों को पूजना भी कार्यकारी नहीं है।

व्यन्तरादि का स्वरूप और उनके पूजने का निषेध...

३) कुछ लोग इस वर्तमान पर्याय सम्बन्धी दुखों के निपटारे के लिए कुदेव आदि को पूजते हैं। ऐसा विचार करते हैं कि अपने दुख मिट जायेंगे, परिवार में सुख शांति रहेगी, लोग मेरी आज्ञा में चलेंगे, मैं मौत के मुँह से निकल जाऊंगा, शत्रु मेरा बुरा नहीं कर पाएगा, शारीरिक कष्ट नहीं होंगे। इसप्रकार वे लोग अनेक प्रयोजनों से कुदेवों को पूजते हैं। ऐसे लोगों की मान्यता बताते हुए पण्डितजी कहते हैं कि यह चौथ, दहाड़ी आदि को पूजता है। व्यन्तरों में भूत-प्रेत आदि को, ज्योतिषों में सूर्य-चन्द्रमा आदि को, तिर्यंचों में गाय-घोड़ा आदि को, एक इन्द्रिय में अग्नि-जल आदि को, अचेतनों में अपनी तलवार, चाकू, दवात, कलम आदि को पूजता है... अधिक क्या कहें रोड़ा इत्यादि अथवा जो हिंसा की सामग्री है, उसे भी पूजता है। विचारों का कुछ ठिकाना ही नहीं है, जिन्हें पूजता है, उनमें से कई तो काल्पनिक हैं, जो होते ही नहीं। किसी भी पत्थर पर सिंदूर या लाल रंग पोतकर, उन्हें भगवान समझकर पूजने लगता है; इसलिए इनको पूजना तो कार्यकारी है ही नहीं।

कुछ ऐसे भी हैं, जो होते हैं अर्थात् जिनका अस्तित्व पाया जाता है। जैसे व्यन्तर आदि; लेकिन वे भी किसी का भला बुरा करने में समर्थ नहीं हैं। प्रसन्न होकर किसी को धनादिक नहीं दे सकते और द्वेषी होकर किसी का बुरा नहीं कर सकते। कभी-कभी इस जीव के पाप का उदय होने पर व्यन्तर आदि कौतुहलबुद्धि से चेष्टा करते हैं, उनके चेष्टा करने से यह दुखी होता है। यदि यह उनके कहे अनुसार कार्य करे तो वे और कौतुहल करके इसे दुखी करते हैं; किन्तु यदि यह उनके कहे अनुसार कार्य ना करे, तो कुछ चेष्टा नहीं करते। कभी-कभी तो ऐसा भी देखा जाता है कि जो लोग इनकी निंदा करते हैं, इन्हें अपशब्द कहते हैं, इनकी मूर्तियों को तोड़ देते हैं। उनके साथ भी कुछ बुरा बर्ताव नहीं करते; क्योंकि पुण्य का उदय हो तो कोई कुछ भी नहीं कर सकता।

उनसे पंडितजी कहते हैं कि स्वयं के पुण्य-पाप आदि भावों से ही सुख-दु:ख होता है, कुदेवादिक के मानने पूजने से तो उल्टा रोग ही होता है; कार्य सिद्धि नहीं होती। जो भला होता है, वह पुण्य कर्म के उदय से होता है और जो बुरा होता है, वह पाप कर्म के उदय से होता है। अतः भला बुरा होने में निमित्त कारण तो अपने किए हुए कर्म का उदय ही है। उनको कारण ना मानकर कुदेव

आदि को सुख-दु:ख का कारण मानने से मिथ्यात्व का पोषण होता है। भला तो होता नहीं, उल्टा बुरा ही होता है। मनुष्य भव बर्बाद हो जाता है; इसलिए इनके पूजने का इतनी कठोरता से निषेध करते हैं। इसप्रकार इस लोक के प्रयोजन से भी कुदेव आदि को पूजना अकार्यकारी सिद्ध हुआ।

● यदि चमत्कारों को देखकर इनको पूजता है, तो उनमें से कई चमत्कार तो झूठे होते हैं और यदि कोई चमत्कार सच्चे भी होते हो तो वे भी व्यंतरादि द्वारा किए जाते हैं। जैसे - किन्नर, किंपुरुष, महोरग और गंधर्व - इन चार प्रकार के व्यन्तरवासी देवों में भक्ति की प्रधानता होती है। उसके वशीभूत भगवान की पूजा-भक्ति आदि की भावना से मंदिर में आकर भक्ति आदि करते हैं। कई मंदिरों में रात्रि में घंटे बजते हुए सुनाई देते हैं, कहीं-कहीं रात्रि में भक्ति की आवाजें सुनाई देती हैं। ये चमत्कार जैन धर्म से राग रखने वाले व्यन्तरादि द्वारा किए जाते हैं; भगवान द्वारा नहीं। उसीप्रकार अन्यमत के मंदिरों में जो चमत्कार देखे जाते हैं, वे चमत्कार भी उनके अनुचरों द्वारा किए जाते है; अत: चमत्कारों को देखकर भी कुदेव आदि को पूजना योग्य नहीं है।

● अन्यमतों में परमेश्वर प्रत्यक्ष दर्शन देते हैं, भक्तों की सहायता करते दिखाई देते हैं। वह भी व्यन्तरों द्वारा ही की जाती है। यदि परमेश्वर सहायता करते हैं, तो सभी भक्तों का भला करें; क्योंकि उनमें तो त्रिकालज्ञपना और सर्वज्ञपना दोनों है। यदि तुम कहोगे कि भक्तों में पहले अब जैसी भक्ति नहीं है, इस युग में सच्चे भक्त नहीं है; इसलिए सभी भक्तों का भला नहीं करते। सो यह बात भी बिना विचारे ही कही गई है; क्योंकि अभी के भक्तगण पापियों, चोर-डकेतों से तो भले ही हैं; फिर भी वे परमेश्वर इन भक्तों का भला और उन पापियों का बुरा क्यों नहीं करते?

● यदि मंत्र आदि की शक्ति विशेष होने से कुदेवादि को पूजते हो, तो उनमें कई मंत्र तो झूठे हैं। यदि कोई मंत्र सच्चा भी हो तो वहाँ भी कभी, किसी काल में निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध होने से ही कार्यसिद्धि बन पाती है; सदैव सबको नहीं। अत: मंत्रादिक के कारण से भी कुदेव आदि को पूजना कार्यकारी नहीं है।

इसप्रकार कुदेवों को पूजने से कुछ भी प्रयोजन सिद्ध नहीं होता, उल्टा बुरा ही होता है। ऐसे तीव्र मिथ्यात्वादिक भाव होने पर मोक्षमार्ग अति दुर्लभ हो जाता है; अत: किसी भी प्रयोजन से कुदेवों को पूजना योग्य नहीं है। इस प्रकार अनेक तर्क व युक्तियों द्वारा गृहीत मिथ्यात्व को छुड़ाया; परन्तु अभी बात पूरी नहीं हुई, आगे भी नए-नए तर्कों द्वारा इसी बात को सिद्ध करेंगे। **(क्रमश:)**

टोडरमल स्मृति दिवस समारोह सम्पन्न

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय द्वारा कालजयी विद्वान आचार्यकल्प पण्डितप्रवर टोडरमलजी के स्मृति दिवस के अवसर पर विशिष्ट सभा का आयोजन किया गया।

कार्तिक सुदी पंचमी, 9 नवम्बर 2021 को रात्रि में आयोजित इस सभा की अध्यक्षता अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने की।

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने पण्डित टोडरमलजी की मृत्यु की तिथि एवं उसके कारणों को इतिहास में उद्धृत प्रमाणों के आधार से स्पष्ट किया। साथ ही कहा कि मोक्षमार्गप्रकाशक ग्रन्थ में मिथ्यात्व का गृहीत-अगृहीत के भेद से वर्णन पण्डितजी का नवीन प्रमेय है और यही उपलब्ध मोक्षमार्गप्रकाशक का मूल प्रतिपाद्य है।

पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने मोक्षमार्गप्रकाशक की अद्वितीयता बताते हुए कहा कि अन्य ग्रन्थों में तो मात्र लक्ष्य एवं लक्ष्य को प्राप्त करने के मार्ग का वर्णन है; परन्तु इसमें हम कहाँ खड़े हुए हैं, कहाँ भूल कर रहे हैं, इस बात को भी स्पष्ट किया है।

डॉ. शांतिकुमारजी पाटील ने मोक्षमार्गप्रकाशक ग्रन्थ के अनेक उद्धरण देते कहा कि पण्डित टोडरमलजी पल्लवग्राही विद्वान ना होकर मूलग्राही विद्वान हैं, जो हर बात को अत्यधिक सूक्ष्मता से देखते हुए मूल बात को पकडते हैं।

डॉ. संजीवकुमारजी गोधा ने कहा कि पण्डितजी को इतिहास में तीन श्रद्धांजलि समर्पित हो चुकी हैं। १) गोदीकाजी द्वारा टोडरमल स्मारक का निर्माण, २) गुरुदेवश्री द्वारा मुखपट्टी का त्याग, ३) डॉ. भारिल्लजी द्वारा टोडरमलजी पर पीएच.डी.। अब हमारी बारी है...।

डॉ. दीपकजी वैद्य ने कहा कि पण्डित टोडरमलजी के उदाहरणों से यह प्रतिलक्षित होता है की वे चिकित्सा सम्बन्धी विचारों के भी गहरे जानकार थे।

पण्डित पीयूषजी शास्त्री ने पण्डित टोडरमलजी के विषय में और शोध की आवश्यकता पर बल दिया तथा कहा कि उनकी सत्य के निरूपण के प्रति निष्ठा अनुकरणीय है।

छात्र वक्तव्य में समर्थ जैन, हरदा (द्वितीय वर्ष) ने पण्डित टोडरमलजी की मृत्यु के सम्बन्ध में एवं स्वानुभव जैन, खनियांधाना (तृतीय वर्ष) ने साहित्य साधना के सम्बन्ध में विचार रखे।

सत्र का संचालन समकित जैन, ईसागढ़ (शास्त्री तृतीय वर्ष) एवं मंगलाचरण सन्देश जैन, दिल्ली (शास्त्री द्वितीय वर्ष) ने किया।

सम्पूर्ण कार्यक्रम महाविद्यालय के उपप्राचार्य **पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री** के निर्देशन में सम्पन्न हुआ।

दीपावली पर अयोजित शिविर सम्पन्न

१) तीर्थधाम मङ्गलायतन : श्री आदिनाथ कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट एवं कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन के संयुक्त तत्त्वावधान में आध्यात्मिक शिक्षण शिविर दिनांक 30 अक्टूबर से 04 नवम्बर तक विधान, पूजन, प्रवचन, वाचना, जिनेन्द्रभक्ति, सांस्कृतिक कार्यक्रमादि अनेक आयोजनों सहित सम्पन्न हुआ।

31 अक्टूबर को प्रात: मंगल कलश शोभायात्रा के पश्चात् ध्वजारोहण श्री जैनबहादुरजी जैन परिवार, धवलाजी विराजमान श्री कमलजी मधुजी बोहरा परिवार एवं शिविर का उद्घाटन श्री विजयजी बड़जात्या व श्री पदमजी पहाड़िया के करकमलों द्वारा किया गया।

उद्घाटन सभा के अध्यक्ष श्री विजयजी बड़जात्या थे। पण्डित देवेन्द्रकुमारजी बिजौलियां, पण्डित प्रदीपजी झांझरी, डॉ. योगेशजी अलीगंज, पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर, ब्र. सुकुमालजी झांझरी, पण्डित अशोकजी लुहाड़िया, पण्डित सचिनजी जैन, डॉ. सचिन्द्रजी शास्त्री, डॉ. विवेकजी शास्त्री इन्दौर, पण्डित सुनीलजी धवल, पण्डित दीपकजी धवल, पण्डित रिमांशुजी शास्त्री, पण्डित दिव्यांशजी शास्त्री एवं श्री अशोकजी जबलपुर का समागम प्राप्त हुआ।

प्रात: डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा रचित, पण्डित राजमलजी पवैया द्वारा रचित, पण्डित अभयकुमारजी देवलाली द्वारा रचित तीन लधुसमयसार विधान अलग–अलग दिन सम्पन्न हुए।

प्रात: पूज्य गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन तत्पश्चात् पण्डित विमलजी झांझरी के प्रवचनों का लाभ मिला। दोपहर में बाल ब्र. कल्पनाबेनजी द्वारा श्लोक पाठ एवं धवलाजी वाचन के पश्चात् समागत विशिष्ट विद्वानों के प्रवचनों का लाभ मिला। सायंकाल जिनेन्द्रभक्ति के उपरान्त पण्डित जे.पी.जी दोशी एवं पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर के प्रवचनों का लाभ मिला।

सभा का संचालन पण्डित सुधीरजी शास्त्री, कृतिकराजजी व सम्यकजी जैन ने एवं मङ्गलाचरण वरंग जैन ने किया।

२) देवलाली : यहाँ दिनांक 01 से 05 नवम्बर 2021 तक पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली द्वारा भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव पर आयोजित श्री समयसार कलश मण्डल विधान सानन्द सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम के प्रथम दिन मंगल कलश विधि एवं ध्वजारोहण विधानकर्ता परिवारों द्वारा किया गया।

प्रात:काल श्री समयसार कलश मण्डल विधान व गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन के पश्चात् समयसार कलश विधान की जयमाला (आचार्य अमृतचंद्र का अमृत) पर अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यानों का लाभ मिला, इसके पूर्व समयसार पर पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड के प्रवचन हुए।

दोपहर में बाल ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री एवं बाल ब्र.हेमचन्दजी 'हेम' के प्रवचन का लाभ मिला। रात्रिकालीन सत्र में जिनेन्द्र भक्ति के पश्चात् पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित सुरेशजी शास्त्री गुना एवं पण्डित गजेन्द्रजी शास्त्री के प्रवचन का लाभ मिला। मुख्य प्रवचन के रूप में पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड द्वारा मोक्षमार्ग प्रकाशक के नोवें अधिकार पर चर्चा की गई।

दिनांक 04 नवम्बर को भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव बहुत ही धूमधाम से निर्वाण लाडू चढ़ाकर मनाया गया। विधिविधान के समस्त कार्यक्रम पण्डित विरागजी शास्त्री व पण्डित अंकितजी शास्त्री लूणदा एवं विधान पण्डित समकितजी शास्त्री व पण्डित उर्विषजी शास्त्री देवलाली द्वारा सम्पन्न हुआ।

अंत में संस्थान के ट्रस्टी श्री विपुलभाई मोटाणी द्वारा सभी का आभार व्यक्त किया गया।

वीर निर्वाणोत्सव : एक परिचर्चा

भगवान महावीर के निर्वाण महोत्सव के अवसर पर दिनांक 03 नवम्बर को अध्यात्मवेत्ता डॉ. संजीवकुमारजी गोधा की अध्यक्षता में ऑनलाइन परिचर्चा का आयोजन किया गया। परिचर्चा में भगवान महावीर के जन्म से लेकर निर्वाण तक के इतिहास, उनके निर्वाणतिथि सम्बन्धी अनेक मान्यताओं, निर्वाण सम्बन्धी भ्रांतियों तथा अन्य महत्त्वपूर्ण बातों पर विशेष चिन्तन व समाधान दिए गए।

अध्यक्ष महोदय के अतिरिक्त पण्डित अमनजी शास्त्री, पण्डित आप्तजी शास्त्री, पण्डित पलजी शास्त्री, पण्डित पवित्रजी शास्त्री, पण्डित शुभांशुजी शास्त्री एवं पण्डित अखिलजी शास्त्री द्वारा विषयों पर प्रकाश डाला गया। परिचर्चा का सफल संचालन पण्डित सम्भवजी शास्त्री एवं पण्डित संयमजी शास्त्री दिल्ली ने किया।

हार्दिक बधाई

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के 33 वें बैच के स्नातक श्री सनत जैन शास्त्री, छतरपुर की मध्यप्रदेश शासकीय शिक्षक विभाग में उच्च माध्यमिक अध्यापक के रूप में नियुक्ति पर बधाई। इस उपलक्ष्य में 1100/– रूपये की राशि प्राप्त हुई; एतदर्थ धन्यवाद।

कर्तृत्व के अहंकार एवं अपनत्व की ममकार से दूर रहकर जो स्व और पर को समग्र रूप से जान सके, महावीर के अनुसार वही भगवान। – डॉ. हुकमचंद भारिल्ल

वीर निर्वाणोत्सव पर आयोजित कार्यक्रम

१) जयपुर (राज.) : यहाँ पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के तत्त्वावधान में वीर निर्वाणोत्सव के अवसर पर पंचतीर्थ जिनालय में स्थित पावापुरी की मनोहर रचना के समीप डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री हीराचंदजी वैद्य, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री एवं बापूनगर संभाग के साधार्मियों की उपस्थिति में पूजन एवं निर्माण लाडू के कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

तत्पश्चात् डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के दीपावली पर विशेष प्रवचनों का प्रसारण एवं समयसार कलश विधान की जयमाला पर विशेष व्याख्यान का लाभ मिला।

२) रामपुरा (कोटा) : यहाँ मुमुक्षु मण्डल के तत्त्वावधान में भगवान महावीर के निर्वाण महोत्सव का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के प्रारम्भ में नित्य नियम पूजन के पश्चात् पण्डित संजयजी शास्त्री कोटा द्वारा भगवान महावीर के निर्वाण महोत्सव का रोचक परिदृश्य मनमोहक शैली में प्रस्तुत किया गया।

३) आत्मार्थी ट्रस्ट : यहाँ श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द कहान आत्मार्थी ट्रस्ट दिल्ली के आयोजकत्व में दि. 4 से 5 नवम्बर तक भगवान महावीर के निर्वाण महोत्सव के अवसर पर बाल ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री सनावद, पण्डित रजनीभाई हिम्मतनगर, पण्डित अशोकजी उज्जैन आदि की उपस्थिति में स्व. श्री विमलकुमारजी परिवार एवं जिनमंदिर में प्रतिमा विराजमान करने वाले ३१ परिवारों द्वारा निर्वाण लाडू समर्पित किया गया। साथ ही पण्डित रजनीभाई दोषी हिम्मतनगर के विशेष व्याख्यान का लाभ मिला।

४) टी.वी. के पारस चैनल पर दिनांक 03 नवम्बर 2021 को डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के दीपावली पर्व से सम्बन्धित समस्त प्रसंग एवं तथ्यों पर प्रकाश डालने वाले 53 मिनिट के प्रासंगिक प्रवचन का प्रसारण किया गया।

ज्ञातव्य है कि रोजाना रात्रि 10:00 बजे पुरूषार्थ सिद्धि उपाय विषय पर प्रवचनों का प्रसारण किया जा रहा है।

५) खनियाधांना (म.प्र.) : यहाँ भगवान महावीर के निर्वाणोत्सव पर प्रात: निर्वाण लाडू के कार्यक्रम के साथ रात्रिकालीन सत्र में पण्डित चर्चितजी शास्त्री खनियाधांना द्वारा गौतम गणधर के जीवनवृत्तों पर विशेष प्रकाश डाला गया। साथ ही आदर्शों का मेला नामक विशिष्ट कार्यक्रम के अन्तर्गत जिनशासन के आदर्श व्यक्तित्वों के जीवन में घटित प्रेरक प्रसंगों को लघु नाटिकाओं के रूप में प्रस्तुत किया गया।

रत्नत्रय मण्डल विधान सम्पन्न

सोनागिर (म.प्र.) : यहाँ श्री परमागम श्रावक ट्रस्ट के तत्त्वावधान में दिनांक 07 से 10 नवम्बर 2021 तक श्री रत्नत्रय मण्डल विधान का मंगलमय आयोजन सानन्द सम्पन्न हुआ।

दैनिक कार्यक्रमों में प्रात: पण्डित श्रेणिकजी जबलपुर, ब्र. महेन्द्रजी अमायन एवं ब्र. नन्ने भैयाजी के सहयोग से रत्नत्रय मण्डल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर बाल ब्र. पण्डित रवीन्द्रजी 'आत्मन' के अध्यात्मरस से सरावोर व्याख्यानों के अतिरिक्त डॉ. वीरसागरजी दिल्ली एवं पण्डित कमलेशकुमारजी मौ के प्रवचन का लाभ मिला।

कार्यक्रम के आयोजन में श्रीमान सुशीलकुमारजी सेठी, दिल्ली का भरपूर सहयोग रहा। कार्यक्रम का संचालन श्री पदमकुमारजी पहाड़िया इंदौर द्वारा किया गया।

भजनों के संग्रह का भव्य प्रस्तुतीकरण

श्री कुन्दकुन्द–कहान परमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा Red Ribbon Entertainment के सहयोग से अध्यात्म संजीवनी audio album में प्राचीन युग के प्रमुख कवियों व ज्ञानीजनों द्वारा लिखे गए, अध्यात्म रस से ओतप्रोत भक्तिमय भजनों को वर्तमान के ख्यातिप्राप्त संगीतकारों व गीतकारों द्वारा नवीन मधुरिम स्वर प्रदान किये गये है। अध्यात्म संजीवनी भक्तिमय भजन संग्रह भाग १ से ४ के Digital संस्करण को सभी digital platforms पर रिलीज किया गया है। इन भजनों को आप Spotify, Apple Music, Gaana, JioSaavan, Amazone Music, Wynk, Hungama ऑडियो एप्स पर तथा वीतराग वाणी के Youtube channel पर video के रूप में सुन व देख सकते हैं।

वैराग्य समाचार

खनियांधाना निवासी **श्री कपूरचन्दजी जैन चौधरी** का दिनांक 10 नवम्बर 2021 को 88 वर्ष की उम्र में निधन हो गया। आप 1970 में आयोजित विदिशा शिविर के माध्यम से जुड़े और फिर अपने जीवन को जिनधर्म की प्रभावना में मोड़ दिया। आपने अपने परिवार के सभी बच्चों (नयन शास्त्री, रजत शास्त्री, अमितेन्द्र शास्त्री, प्रजल शास्त्री एवं शाश्वत महिमा शास्त्री) को विद्वान बनने हेतु टोडरमल महाविद्यालय में भेजा। आपकी स्मृति में 11000/- रूपये की राशि दान स्वरूप प्राप्त हुई; एतदर्थ धन्यवाद। दिवंगत आत्मा शीघ्र मोक्ष प्राप्त करे – यही भावना।

प्रथम शतक : दोहा शतक

–डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

देव–शास्त्र–गुरु

(दोहा)

पर पदार्थ में अपनपन ही पहाड–सी भूल।
जब तक यह मिटती नहीं, मिटे न कोई भूल।। २१।।

इस पहाड–सी भूल को, कहते हैं मिथ्यात्व।
अपने में ही अपनपन को कहते सम्यक्त्व।। २२।।

अपना आतम अपन हैं, जो अपने से भिन्न।
उनको ही पर जानिये, उनसे अपन हैं भिन्न।। २३।।

परपदार्थ तो परहि हैं, पर पर में अपनत्व।
उसको भी पर जानिये, वह एकत्व–ममत्व।। २४।।

वह एकत्व–ममत्व ही, है पर में अपनत्व।
अध्यातम में उसे ही, कहते हैं मिथ्यात्व।। २५।।

अपने में ही जन्मते, राग–द्वेष–मिथ्यात्व।
अपनी ही पर्याय हैं, पर आतम से अन्य।। २६।।

उनको भी पर जानिये, वे हैं आस्रव तत्त्व।
ज्ञानीजन करते नहीं, उनमें भी अपनत्व।। २७।।

दृष्टि का जो विषय है, और ध्यान का ध्येय।
परमशुद्धनय का विषय, परम पदारथ ज्ञेय।। २८।।

आतम कहते हैं उसे, उसमें ही अपनत्व।
सम्यग्दर्शन–ज्ञान हैं, अर सम्यक्चारित्र।। २९।।

सर्वज्ञों की बात यह, कही जिनागम माँहि।
यह मुक्ति का मार्ग है, ज्ञानीजन समुझाँहि।। ३०।।

पर्यायों से पार मैं, गुणभेदों से भिन्न।
पर्यायें तो अंश हैं, मैं हूँ अंशी द्रव्य।। ३१।।

परमभावग्राही अरे, जो द्रव्यार्थिक होय।
उस नय का जो विषय है, वही द्रव्य 'मैं' होय।। ३२।।

द्रव्य तत्त्व तो दो हि हैं, जो हैं जीव–अजीव।
शेष सभी जो तत्त्व हैं, वे पर्याय सदीव।। ३३।।

आस्रव–संवर–निर्जरा, एवं पाप अरु पुण्य।
बन्ध–मोक्ष इन सभी को, कहते पर्यय तत्त्व।। ३४।।

पर्यय तत्त्वों से पृथक्, अर अजीव से भिन्न।
परजीवों से भी पृथक्, मैं हूँ आतम तत्त्व।। ३५।।

बाकी तत्त्वों से पृथक्, परजीवों से भिन्न।
ज्ञानानन्दी जीव मैं, मैं कारणपरमात्म।। ३६।।

इस कारणपरमात्म में, जब अपनापन होय।
सम्यग्दर्शन–ज्ञानमय, तब यह आतम होय।। ३७।।

करे न बोले और जब, चिन्तन भी न होय।
ज्ञान ज्ञान में थिर रहे, यही ध्यान है सोय।। ३८।।

निर्विकल्प यह ध्यान है, ना है कोई विकल्प।
शेष अवस्थायें सभी, होती हैं सविकल्प।। ३९।।

देखो जानो स्वयं को, सहज जानना होय।
देखन–जानन क्रिया सब, सहज भाव से होय।। ४०।।

चित्त रहे आनन्दमय, सहज शान्त परिणाम।
सहज समाधि लोक में, है इसका ही नाम।। ४१।।

सामायिक भी है यही, यही शुद्ध उपयोग।
परम धर्म भी है यही, योगिजनों का योग।। ४२।।

यह ही निश्चय भक्ति है, यह ही है संन्यास।
आत्मरमणता भी यही, यह ही ज्ञानाभ्यास[१]।। ४३।।

१. द्रव्यसंग्रह गाथा ५६ की संस्कृत टीका देखें।

प्रश्नोत्तरमाला (समयसार अनुशीलन के आधार से)

10

– डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया

(गतांक से आगे...)

प्रश्न 99– आत्मा को ज्ञायक क्यों कहा जाता है?

उत्तर – ज्ञेयों को जानने के कारण आत्मा को ज्ञायक कहते हैं?

प्रश्न 100 – ज्ञायकत्व मात्र स्वयं शुद्ध कैसे है?

उत्तर – ज्ञेय ज्ञान में प्रतिभासित हुआ वैसा ज्ञायक का ही अनुभव करने पर ज्ञायक ही है, यह जो मैं जानने वाला हूँ सो मैं ही हूँ; अन्य कोई नहीं – ऐसा अपने को अभेदरूप अनुभूत हुआ तब इस जाननेरूप क्रिया का कर्ता स्वयं ही है और जिसे जाना वह कर्म भी स्वयं ही है, ऐसा ज्ञायकत्व मात्र स्वयं शुद्ध है।

प्रश्न 101– गुणस्थानातीत ज्ञायक भाव सिद्ध है या संसारी?

उत्तर – गुणस्थानातीत ज्ञायक भाव ना सिद्ध है, न संसारी; यह तो संसारी व सिद्ध – दोनों अवस्थाओं में समान रूप से गुणस्थानातीत है। इसमें न गुणस्थानरूप अवस्था है, ना गुणस्थानों के अभाव रूप अवस्था है, यह अवस्थारूप है ही नहीं।

प्रश्न 102 – यदि ज्ञायक भाव सदा शुद्ध है तो उसका लाभ हमें प्राप्त क्यों नहीं होता?

उत्तर – पर्याय में शुद्धता न होने से हमें द्रव्य की शुद्धता का लाभ प्राप्त नहीं होता है।

प्रश्न 103 – पर्याय में शुद्धता कैसे आती है?

उत्तर – पर्याय में शुद्धता ज्ञायक भाव के अनुभव से आती है।

प्रश्न 104 – ज्ञायकभाव के शुद्ध होने का लाभ कब प्राप्त होता है?

उत्तर – जब ज्ञायक भाव अपना अनुभव कर पर्याय में शुद्ध होता है तब ज्ञायक भाव में शुद्ध होने का लाभ हमें प्राप्त होता है।

प्रश्न 105 – क्या ज्ञेयकृत अशुद्धता ज्ञान में प्रवेश करती है?

उत्तर – नहीं, क्योंकि परज्ञेयों से आत्मा का कोई संबंध नहीं है, अत: ज्ञेयकृत अशुद्धता ज्ञान में प्रवेश नहीं करती है। ज्ञेय को जानने रूप ज्ञान की योग्यता के कारण ही ज्ञान का परिणमन ज्ञेयाकार होता है। अत: ज्ञान में ज्ञेयकृत अशुद्धता नहीं होती अथवा ज्ञान के ज्ञेयाकार परिणमन में ज्ञेय कारण बने तो ही ज्ञान में ज्ञेयकृत अशुद्धता आ सकती है; किन्तु ज्ञान का परिणमन तो अपनी योग्यता से स्वतंत्र ही होता है; अत: ज्ञान में ज्ञेयकृत अशुद्धता नहीं हो सकती। वस्तुत: ज्ञान में ज्ञेयों के जो आकार भासित होते हैं, वे आकार ज्ञान की ही पर्यायें हैं, ज्ञेयों की नहीं, अत: स्पष्ट ही है कि ज्ञान ज्ञानाकार ही रहा– ऐसी स्थिति में उसमें ज्ञेयकृत अशुद्धता संभव ही नहीं है। (क्रमश:)

दस्तक ! आगामी कार्यक्रमों की...

१) सिंगोली (राज.) : यहाँ श्री कानजीस्वामी के प्रभावना योग में श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन धार्मिक ट्रस्ट, पारमार्थिक ट्रस्ट के सहयोग से 03 से 08 दिसम्बर 2021 तक पंच कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का भव्य आयोजन किया जा रहा है। मूलनायक आदिनाथ भगवान की मनोहारी प्रतिमा सहित पार्श्वनाथ भगवान, पंच परमेष्ठी वेदी, ह्रीं वेदी, मानस्तम्भ, श्रुत स्कन्ध एवं स्वाध्याय भवन का नव निर्माण किया गया है। यह आयोजन प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्र. पण्डित जतीशचंदजी शास्त्री के अतिरिक्त पण्डित रजनीभाई दोशी के निर्देशन एवं पण्डित अशोकजी लुहाडिया, पण्डित देवेन्द्रजी जैन के सहनिर्देशन में सम्पन्न होगा।

सम्पर्क सूत्र :- नवीन जैन - 9424066521

२) गजपंथा (राज) : यहाँ दिनांक 12 से 19 दिसम्बर 2021 तक आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है, जिसके अन्तर्गत पण्डित दिनेशभाई शहा द्वारा द्रव्यानुयोग एवं विदुषी डॉ. उज्ज्वलाजी शहा द्वारा करणानुयोग के गहन विषयों पर रोजना ६ घन्टों तक कक्षाओं का आयोजन किया जाएगा।

रजिस्ट्रेशन की अंतिम तिथि :- 30 नवम्बर 2021

सम्पर्क सूत्र :- पण्डित शुभम शास्त्री - 8502827908

३) आरोन (गुना) : यहाँ दिनांक 19 से 24 दिसम्बर 02021 तक पंच कल्याणक समारोह का भव्य आयोजन किया जा रहा है। इस पंच कल्याणक में ख्यातिप्राप्त विद्वान पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा एवं पण्डित मनीषजी शास्त्री मेरठ के व्याख्यानों का लाभ प्राप्त होगा। पंच कल्याणक प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्र. अभिनन्दनकुमारजी देवलाली, निर्देशक डॉ. राकेशजी शास्त्री, नागपुर व पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर एवं कार्यक्रम के संचालक पण्डित अभयकुमारजी देवलाली व पण्डित संजयजी शास्त्री कोटा रहेंगे। समिति के अध्यक्ष मुमुक्षु आश्रम कोटा के संस्थापक श्री प्रेमचंदजी बजाज हैं।

सम्पर्क सूत्र :- पण्डित अंकित जैन - 9039443474

४) इंदौर (म.प्र.) : यहाँ तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन के निर्देशन में दिनांक 25 से 30 दिसम्बर 2021 तक इन्द्रध्वज महामण्डल विधान का भव्य किया जा रहा है। जिसमें मुख्य विद्वान के रूप में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, प्रतिष्ठाचार्य वाल ब्र. अभिनंदनजी देवलाली सहित विशिष्ट विद्वानों का समागम प्राप्त होगा।

सम्पर्क सूत्र :- पण्डित विवेक शास्त्री - 7828013898

अतः सभी अधिक से अधिक संख्या में पधारकर धर्म लाभ लेवें।

17 नवम्बर 2021, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2021-23

अपनों से अपनी बात....

अमृतचंद्र का अमृत

31 अक्टूबर 2021 को पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली द्वारा आयोजित अपनों से अपनी बात के अन्तर्गत डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने कहा कि आचार्य ने कलशरूपी गागर में अध्यात्म में रूपी अमृत के सागर को कूट-कूट कर भरा है, जो अमृत बरसाया है, वह अनुपम है, अपार है। समयसार की टीका होने पर भी उन कलशों ने स्वतंत्र ग्रंथों जैसा गौरव पाया है। उन कलशों में इतना अमृत भरा हुआ है कि उसके ऊपर अनेकों टीकाएँ लिखी जा चुकी है।

पण्डित टोडरमलजी तो यहाँ तक कहते हैं कि यदि अध्यात्म देखना है तो आत्मख्याति में देखो।

आचार्य अमृतचंद्र का अमृत(कलश) कर्तृत्व के भार से निर्भार कराने वाला है; अकर्तृत्व का पाठ पढ़ाने वाले है। वह तो स्वयं लिखते हैं कि इन कलशों की रचना मैंने की है, ऐसा सोच कर मोह में मत नाचना; क्योंकि मैं इसका कर्ता नहीं हूँ।

स्वयं भी कर्तृत्व के भार से निर्भार हुए हैं और कलशों द्वारा हमें भी कर्तृत्व के भार से निर्भार कराना चाहते हैं।

हार्दिक शुभकामनाएँ

१) वीतराग-विज्ञान एवं जैन पथप्रदर्शक पत्रिका के प्रकाशन में सहयोगी के पद पर नियुक्ति हेतु पण्डित अखिलजी शास्त्री, मण्डीदीप को शुभकामनाएँ।

२) श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय जयपुर में अधीक्षक पद पर नियुक्ति हेतु पण्डित अमनजी शास्त्री, लोनी को शुभकामनाएँ।

टोडरमल स्मारक कार्यालय परिवार में नियुक्त दोनों विद्वानों के उज्जवल भविष्य की कामना।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट प्रस्तुत करता है

PTST MUSIC

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा रचित सभी रचनाएँ अब ऑडियो के सभी प्लेटफॉर्म पर भी उपलब्ध।

सप्तशतक आदि अनेक रचनाओं को बिना किसी तकनीकी समस्या के मात्र एक टच में घर पर, दुकान पर यहाँ तक की गाड़ी में आते जाते भी इन्हें सुनकर समय का सदुपयोग कर सकते हैं। कॉलर ट्यून एवं रिंगटोन में इसका भरपूर लाभ उठा सकते हैं।

आगामी रचनाओं को सुनने के लिए डॉ. हुकमचंद भारिल्ल चैनल को फॉलो करें

स्वर एवं संगीत

डॉ. गौरव सोगानी एवं दीपशिखा सोगानी

निर्देशक	विशेष सहयोग
श्री परमात्मप्रकाश भारिल्ल	पण्डित पीयूष शास्त्री
श्री शुद्धात्मप्रकाश भारिल्ल	पण्डित जिनेंद्र शास्त्री

music saavn DEEZER iTunes

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com

संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com
ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.

सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**

प्रकाशक व मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458, 7412078704
E-Mail : veetragvigyanjpp@gmail.com

प्रकाशन तिथि : 13 नवम्बर 2021

प्रति,